

## नूतन गिद्ध

हुआ समय के साथ हमारा भी है क्रामिक विकास ।  
अब रहते हैं सदा क्रियारत तम हो या कि प्रकाश ।  
पहले नभारुढ़ करते थे अन्वेषित हम लाश ।  
अब मुमूर्षुता देख प्राणि की आ जाते हैं पास । 1 ।

अब अतीत की बात हमारे लिए मृतक की खोज ।  
निर्दय होकर करते हैं हम अबल सत्व का भोज ।  
क्षुधा हमारी हुई प्रबल है हों कब प्राण प्रयाण ।  
कौन प्रतीक्षा करे घात कर देते रहते प्राण । 2 ।

अकच शीर्ष है हुआ हमारा हुए कठोर विचार ।  
अब एकाकी भोजन करते गुप्त सकल अतिचार ।  
जाति हमारी संकट में है किया असत्य प्रचार ।  
निर्णय करें असत्य सत्य का जो धरते शिर भार । 3 ।

निर्बल जब होते कुछ दुर्लभ सबलों पर आघात ।  
दुर्दम हो अविरत करते हम तीखे चंचु निपात ।  
मम संरक्षण हेतु हो रहे संतत सघन प्रयास ।  
जनते हैं मेरे अंतर में मात्र हास उपहास । 4 ।

सभी आकलन मेरे नरकृत होंगे यहां असिद्ध ।  
नहीं जानते विषम पहेली सदा रहे हैं गिद्ध ।  
मात्र अग्न्य रहते सिद्धांतों पर दृढ़ और अनम्य ।

कलियुग है इसमें परभोजी ही हो रहा प्रणम्य । 5 ।

मेरा रहता है निसर्गतः केवल चंचु सराग ।  
रहें छेड़ते मूढ़ यहां पर सर्वप्रेम का राग ।  
देता पता जानकी का था बीत गया वह काल ।  
हम नवयुग के गिर्द चाहते अब कब पड़े अकाल । 6 ।

अब लड़ते हम नहीं बली से पीड़ित अबला हेतु ।  
मात्र प्रणम्य हमारे हित हैं ऊंचे उठते केतु ।  
संधि सारवानों से करलो कहती यह मम नीति ।  
हिंसा विरत प्राणियों में बहु उपजाओ तुम भीति । 7 ।

वृक्ष शिखर आसीन भासते मुझको लघुतर सत्त्व ।  
ममहीनताख्यानरत नर गण नहीं जानते तत्त्व ।  
कौन देखता इस नवयुग में किसका है क्या भोज्य ।  
तुंगासन आसीन प्राणि ही अब सबसे है योग्य । 8 ।

अब पथदर्शक बनता केवल नित्य साधने स्वार्थ ।  
उपधि शब्द में छिपे हुए हैं जग व्यवहार महार्थ ।  
दी प्रभु ने उपहार तुल्य जो मुझे दूर की दृष्टि ।  
उससे लेता देख उपायों को जिनसे धनवृष्टि । 9 ।

लेता कनक समेट दीन जन में वितरित कर धान्य ।  
नहीं मांस ही मांसलता भी हुई मुझे अति काम्य ।  
नहीं जानते सूक्ष्म तत्त्व जगती के बहुत अबोध ।

शब्दकी का भी न छीनती प्रकृति रम्यता बोध । 10 ।

सुदृढ़ पक्ष आने देते हैं मुझपर नहीं खरोंच ।  
अभय और हो अम्म पिशित को प्रायः लाता नौंच ।  
करता है ममचरित प्रमाणित गगनचरों की शक्ति ।  
भूचर होकर विवश करेंगे व्योमचरों की भक्ति । 11 ।

छोड़ुं कुछ मासांश अस्थि पर इतना रखता ध्यान ।  
रहते हैं अनुरक्त इसी से मुझमें अतिशय श्वान ।  
भूचर से मित्रता साधती खेचर के बहु कार्य ।  
कलियुग में जनबल साधन बल हुआ बड़ा अनिवार्य । 12 ।

मेरे ही कुछ बंधु भूमि पर विचर रहे सितकेश ।  
पीत तुंड विमलाम्बर धरते भव्य मनोहर वेश ।  
जन आस्था की कृन्तित करते वे क्रमशः दृढ़ नींव ।  
जिनके सम्मुख होते नत शिर धन कुबेर बलसींव । 13 ।

धर्म विमुख जन को कर देते यह उनका उपकार ।  
धर्मतर पथ पतन और क्षय का निर्बाध प्रसार ।  
सभी गिद्ध जानते उन्हें है क्षय ही तो अभिप्रेत ।  
लाशों के अंबार खंडहर एकाकी तरु रेत । 14 ।

शब्दकी हम यदपि जान लें निंदक पर यह सत्य ।  
नहीं स्वजाति भोज गिद्धों का कभी रहा है कृत्य ।  
क्षुद्र त्याग से साध रहे हम जनता की अनुरक्ति ।

मात्र एकता है मम नारा वांछित सदा विभक्ति । 15 ।

हर मानव अब एक वृक्ष है एकाकी उत्तुंग ।

आधि व्याधि पीड़ित नित दुर्बल गर्वित फिर भी शृंग ।

उनके मानस मध्य विराजित हूं मैं अभय समोद ।

नित नवीन भोगों से मेरा होता है उपरोध । 16 ।

इतनी प्रगति नहीं है थोड़ी क्रियाशील पर गिद्ध ।

अध्यवसायी कुशल नहीं क्या हम हो जाते सिद्ध ।

मम अदृश्यता विकल न खोजो मुझको मानव मूढ़ ।

चित वृक्ष आरूढ़ नियंत्रित करता तुम्हें निगूढ़ । 17 ।

- शिव कुमार मिश्र

22-03-2019

भोपाल